95 प्रकार की वनौषधियों से की जाती हैं कंठ रोगों की चिकित्सा

* 150 प्रकार के घरेलू नुस्खें प्रचलन में
* कंठ रोगों मे देर सहन नही करते है पारंपरिक चिकित्सक

हर्बल स्टेट छत्तीसगढ़ मे वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सक कंठ संबंधी रोगों की चिकित्सा मे 95 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग करते है। इसके अलावा राज्य में 150 प्रकार के घरेलू नुस्खे भी प्रचलन मे है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे पिछले दस वर्षों से किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि कंठ के विभिन्न रोगों के लिये अलग-अलग प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग होता है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों मे मकोये और भटकटैया नामक औषधीय खरपतवारों की सहायता से विशेष काढ़े का निर्माण किया जाता है। रोगियों को गुनगुने काढ़े से गरारे करने की सलाह दी जाती है। अधिक लाभदायी प्रभावों के लिये इसमे नीम और शहतूत की पत्तियाँ भी डाली जाती है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक इन पत्तियों के स्थान पर घनबहेर नामक औषधीय वृक्ष की पत्तियों का प्रयोग करते है जबकि उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक मुनगा की पत्तियों को काढ़े मे मिलाते है। गंडई - सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक विभिन जंगली पक्षियों के मल का प्रयोग वनौषधियों के साथ लेप के रुप मे करते है। इनमे जंगली मुर्गें के बीट का प्रयोग लोकप्रिय है। बिलासपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों अरहर, मूंग और उड़द की नयी पत्तियों को पानी मे उबालकर काढ़े का प्रयोग गरारे के रुप मे करने की सलाह देते है। बिलाड़ी क्षेत्र मे बबूल की पत्तियों से तैयार काढ़े का प्रयोग इसी तरह होता है। गला बैठने पर पारंपरिक चिकित्सक मुलैठी से लेकर बच तक परंपरागत वनौषधियों का प्रयोग करते हैं। इन वनौषधियों के विषय मे प्राचीन - चिकित्सकीय ग्रंथों मे जानकारियाँ उपलब्ध है। गरियाबंद के पारंपरिक चिकित्सक औषधीय धान भेजरी को पकाकर गुड़ के साथ खाने की सलाह देते है। अन्य धान की प्रजातियाँ उपयोगी नही समझी जाती है। गला बैठने पर आम निवासी घरेलू नुस्खों की सहायता से आमतौर पर इस समस्या का समाधान कर लेते हैं। इन घरेलू नुस्खों को पारंपरिक चिकित्सकों ने भी मान्यता दे रखी है। कंठमाला की चिकित्सा मे अंबिकापुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक कुल्थी नाम वनौषधि का प्रयोग बाहरी तौर पर गोमूत्र के साथ लेप के रुप मे करते है। इस प्रयोग हेतु कुल्थी को विशेष विधि से उगाया जाता है। इसे औषधीय गुणों से परिपूर्ण करने के लिये दूसरी वनौषधियों के सत्वों से सींचा जाता है।

पंकज अवधिया ने बताया कि पारंपरिक चिकित्सक कंठ संबंधी रोगों की चिकित्सा मे देरी सहन नही करते हैं। उनके अनुसार यह नाजुक अंग है और जरा सी लापरवाही स्थायी दोष पैदा कर सकती है। आंतरिक प्रयोगो की बजाय बाहरी प्रयोगों को अधिक प्राथमिकता दी जाती है।